

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 2: विष्णुदूतों द्वारा अजामिल का उद्धार

13 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



जिस मनुष्य ने अट्ठासी वर्ष पाप में गँवाए, उसकी कथा भगवान् के शाश्वत धाम की ओर स्वर्ण-रथ में आरोहण के साथ समाप्त होती है — यह प्रमाण कि कोई भी जीव भगवन्नाम की पहुँच से परे नहीं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्जम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का प्रथम अध्याय हमें साँस रोके एक ठहराव पर छोड़ गया था: यमराज के दूतों ने पतित ब्राह्मण अजामिल की आत्मा को पकड़ लिया था, और भगवान् विष्णु के तेजस्वी दूतों ने उन्हें रोककर धर्म का यथार्थ स्वरूप पूछा था। यह दूसरा अध्याय वही उत्तर है — और भगवन्नाम की महिमा पर

समस्त भागवत की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक। विष्णुदूत अकाट्य तर्क से समझाते हैं कि “नारायण” का एक बार उच्चारण — अज्ञान में भी, पुत्र को पुकारने के लिए भी — करोड़ों जन्मों के पापों को कैसे पहले ही धो चुका है। अजामिल मुक्त होता है, गहन पश्चात्ताप में जागता है, संसार त्यागता है, और भक्ति से भगवान् का परम धाम प्राप्त करता है। अध्याय श्रीशुकदेव के इस दृढ़ आश्वासन के साथ समाप्त होता है कि जो भी यह कथा श्रद्धा से सुनता है वह नरक के भय से मुक्त हो जाता है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 2 (द्वितीय अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: विष्णुदूतों द्वारा अजामिल का उद्धार
- मुख्य वक्ता: भगवान् विष्णु के दूत (भगवन्नाम की महिमा का विवेचन करते हुए); श्रीशुकदेव (राजा परीक्षित को सुनाते हुए); और स्वयं अजामिल (अपने पश्चात्ताप के आत्म-कथन में)
- मुख्य श्रोता: यमराज के दूत; राजा परीक्षित; और बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: कान्यकुब्ज में अजामिल का मृत्युस्थल; बाद में गंगा-तट पर गंगाद्वार (हरिद्वार); बाह्य कथा गंगा-तट पर रहती है जहाँ परीक्षित सुन रहे हैं
- केन्द्रीय विषय: भगवान् के नाम की परम शोधक शक्ति, अजामिल का उद्धार तथा पश्चात्ताप, और उसका भगवान् के धाम में आरोहण
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 2, श्लोक 1–49
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

विष्णुदूतों का उत्तर: भगवन्नाम की महिमा

यमदूतों की धर्म तथा कर्म पर विचारपूर्ण शिक्षा सुनकर भगवान् के दूतों ने — जो स्वयं नीतिशास्त्र के ज्ञाता थे — कोमल किन्तु तीक्ष्ण भर्त्सना से उत्तर दिया। कितने खेद की बात, उन्होंने कहा, कि अधर्म धर्मज्ञों के दरबार में प्रवेश कर जाए, जहाँ धर्म के ज्ञाता ही उस पर दण्ड थोप दें जो अब उसका पात्र नहीं। साधारण प्रजाजन, उन्होंने कहा, स्वयं धर्म और अधर्म में भेद उतना ही कम कर पाता है जितना एक पशु — वह तो बस अपने स्वामी की गोद में सिर रखकर निश्चिन्त सो जाता है, उस रक्षा पर पूर्ण विश्वास करते हुए जिसे वह स्वयं सुनिश्चित करने में असमर्थ है। यदि जो जनता के रक्षक तथा शिक्षक हैं वे स्वयं भूल करें, तो विश्वास करती जनता किसकी शरण जाए (श्लोक 1-6)?

तब उन्होंने विषय का मर्म प्रकट किया। इस मनुष्य ने, उन्होंने घोषित किया, पहले ही प्रायश्चित्त कर लिया है — केवल इस जीवन के नहीं, अपितु करोड़ों जन्मों के पापों का — क्योंकि अपने असहाय क्षण में उसने श्रीहरि का नाम उच्चारित किया। किन्तु विष्णुदूत यहाँ सावधान हैं कि कृपा को अनुमति-पत्र न बनने दें। अजामिल का जप उसे इसलिए बचा सका क्योंकि उसमें कोई अपराध नहीं था: उसने बार-बार पाप करते हुए यह भरोसा नहीं रखा कि नाम बाद में उसका लेखा मिटा देगा; वह तो केवल अपने पुत्र से प्रेम करता था और अनजाने में ही भगवान् का वही नाम बार-बार पुकारता रहा। यही कारण है कि उसका जप — पापपूर्ण जीवन भर में बिखरा हुआ होते हुए भी — पूर्ण और शुद्ध कहा जा सका (श्लोक 7-8)। जो जीव जान-बूझकर पाप करता रहे और यह मानकर चले कि नाम सदैव उसका लेखा साफ़ कर देगा, वह स्वयं उसी नाम का

अपराधी बन जाता है; अजामिल पर हुई कृपा एक अनजाने शुद्ध हृदय का उत्तर है, न कि गणना किए हुए हृदय का। उसके उद्धार का चमत्कार यह नहीं कि नाम पाप के प्रति उदासीन है, अपितु यह कि भगवान् की कृपा शुद्ध भाव को पापी से भी पहले पहचान लेती है। और भगवान् का नाम, उन्होंने समझाया, हर प्रकार के पापी को शुद्ध करता है, बिना अपवाद।

स्तेनः सुरापो मित्रध्रुग् ब्रह्महा गुरुतल्पगः ।

स्त्रीराजपितृगोहन्ता ये च पातकिनोऽपरे ॥ ९ ॥

सर्वेषामप्यघवतामिदमेव सुनिष्कृतम् ।

नामव्याहरणं विष्णोर्यतस्तद्विषया मतिः ॥ १० ॥

*stenaḥ surā-po mitra-dhrug brahma-hā guru-talpa-gaḥ strī-rāja-pitṛ-go-hantā ye ca pātakino
'pare sarveṣām apy aghavatām idam eva suniṣkṛtam nāma-vyāharaṇam viṣṇor yatas tad-viṣayā
matih*

अर्थ: चोर, मद्यप, मित्रद्रोही, ब्रह्महत्यारा, गुरुपत्नी-गामी, स्त्री-राजा-पिता-गौ का हत्यारा — तथा जो भी अन्य पापी हों — उन सबके लिए समान रूप से एकमात्र सच्चा और पूर्ण प्रायश्चित्त विष्णु के नाम का उच्चारण है, क्योंकि इससे मन उन्हीं की ओर मुड़ जाता है। (स्कन्ध 6, अध्याय 2, श्लोक 9-10)

विष्णुदूतों ने बात को और आगे बढ़ाया। उपवास, दान तथा जप जैसे कर्मकाण्डी प्रायश्चित्त, उन्होंने कहा, प्रकट पापों को तो मिटा सकते हैं, किन्तु उन पापों के छोड़े सूक्ष्म संस्कारों को नहीं — वे संस्कार केवल भगवान् के चरणों की भक्ति-सेवा से मिटते हैं (श्लोक 17)। और सबसे विस्मयकारी बात यह कि नाम तब भी काम करता है जब वह भक्ति के साथ न कहा गया हो।

साङ्केत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा ।

वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः ॥ १४ ॥

*sāṅketyam pārihāsyam vā stobham helanam eva vā vaikuṇṭha-nāma-grahaṇam aśeṣāgha-haram
viduḥ*

अर्थ: विद्वान् जानते हैं कि वैकुण्ठपति के नाम का उच्चारण समस्त पाप नष्ट कर देता है — चाहे वह किसी अन्य वस्तु को इंगित करने के लिए, हँसी में, गीत के बीच के अलाप के रूप में, अथवा उपेक्षापूर्वक ही क्यों न कहा गया हो। (स्कन्ध 6, अध्याय 2, श्लोक 14)



भगवान् विष्णु के दूत यमराज के दूतों को भगवन्नाम की परम शोधक शक्ति का विवेचन करते हैं, जो हर प्रकार के पापी को मुक्त करती है (श्लोक 1-19)।

उन्होंने एक सहज और अविस्मरणीय उपमा दी: जैसे अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, चाहे उसे जानकार मनुष्य ने जलाया हो या अनजान बालक ने, वैसे ही भगवान् का नाम पापों को नष्ट करता है, चाहे वह जानकर उच्चारित हो या अनजाने; और जैसे सामर्थ्यवान् औषधि उसे भी रोगमुक्त कर देती है जो अनजाने में उसे ग्रहण करता है, वैसे ही भगवान् का नाम उसमें भी अपना प्रभाव प्रकट करता है जो उसे संयोगवश कह देता है।

यथागदं वीर्यतममुपयुक्तं यदृच्छया ।

अजानतोऽप्यात्मगुणं कुर्यान्मन्त्रोऽप्युदाहृतः ॥ १९ ॥

yathāgadam vīryatamam upayuktam yadṛccayā ajānato 'py ātma-guṇam kuryān mantro 'py udāhṛtah

अर्थ: जैसे सर्वाधिक सामर्थ्यवान् औषधि अपना प्रभाव तब भी उत्पन्न करती है जब उसे उसकी शक्ति से अनजान व्यक्ति संयोगवश ग्रहण कर ले, वैसे ही भगवान् का पावन नाम, यद्यपि उसकी महिमा को जाने बिना उच्चारित हो, अपना शोधक कार्य सम्पन्न कर देता है। (स्कन्ध 6, अध्याय 2, श्लोक 19)

अजामिल मुक्त होता है

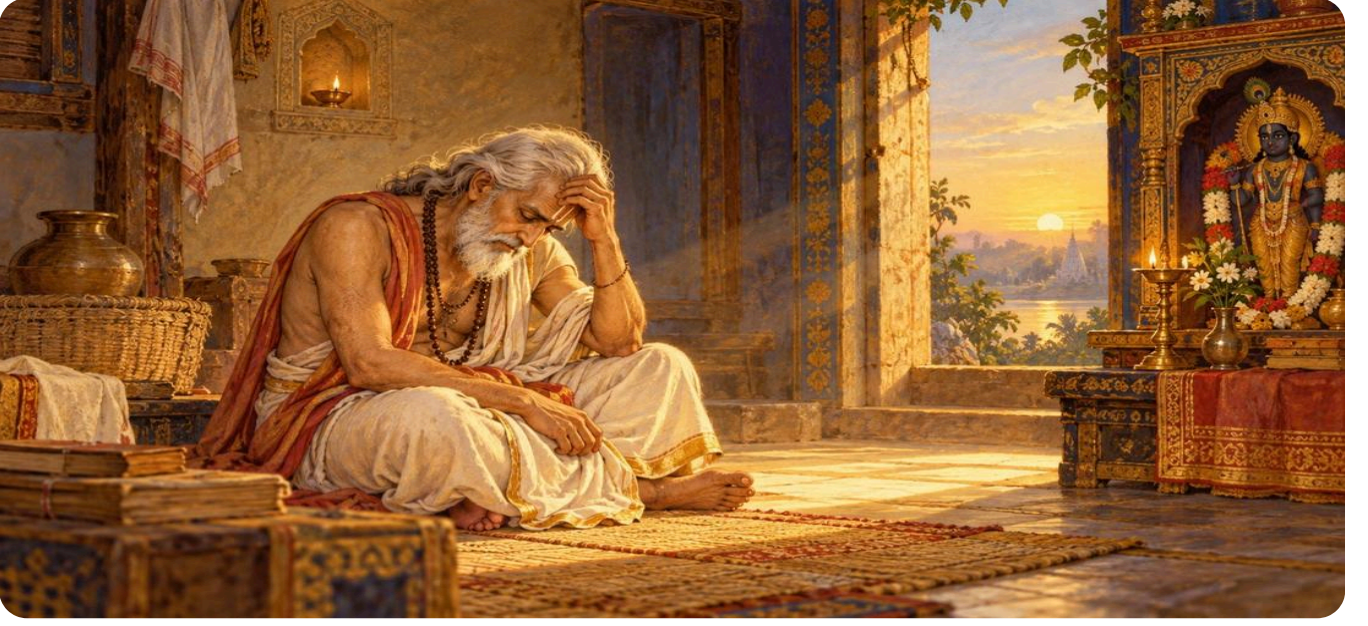
इस प्रकार भक्ति के मार्ग तथा भगवन्नाम की अद्भुत शक्ति का विवेचन कर, भगवान् विष्णु के दूतों ने अजामिल को यम के पाश से मुक्त किया और उसे मृत्यु की पकड़ से छुड़ा लिया (श्लोक 20)। भगवान् के ही दूतों से विवाद में पराजित होकर यमराज के दूत अपने स्वामी के पास लौटे और जो कुछ हुआ था सब निष्ठापूर्वक कह सुनाया (श्लोक 21)। अजामिल, पाश से मुक्त और समस्त भय से रहित, पुनः अपने पूर्व रूप में आ गया — स्वस्थ और शान्त — और अपने रक्षकों को देखकर आनन्दित होकर उसने उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम किया। उसे बोलने को उत्सुक देख विष्णु के दूत सहसा उसकी आँखों के सामने अन्तर्धान हो गए (श्लोक 22-23)।



मृत्यु के पाश से मुक्त और सचेत हुआ अजामिल कृतज्ञतापूर्वक भगवान् विष्णु के दूतों को प्रणाम करता है, जो तब उसकी दृष्टि से अन्तर्धान हो जाते हैं (श्लोक 20-23)।

पश्चात्ताप का जागरण

दोनों दूत-दलों से शुद्ध भक्ति का — तीनों गुणों से अछूती — विवेचन सुनकर अजामिल श्रद्धा तथा अपने अतीत के लिए शोक से भर उठा। उसने अपने जीवन को तीव्र पश्चात्ताप से स्मरण किया। “कितनी बड़ी त्रासदी,” उसने मन-ही-मन कहा, “कि मैंने अपनी निम्न प्रकृति पर संयम न रख पाने से अपना ब्राह्मणत्व खो दिया। धिक्कार है मेरे पापी स्वभाव को — अपने कुल का कलंक — जिसने एक कुलटा स्त्री को रखा और अपनी युवा, निष्ठावान् पत्नी को त्याग दिया। मेरे वृद्ध, असहाय माता-पिता, जिनका कोई अन्य सहारा न था, उन्हें मैंने एक कृतघ्न नीच की भाँति त्याग दिया” (श्लोक 24-28)। उसने स्पष्ट देखा कि ऐसा जीवन किस नरक का अधिकारी था, और अपने उद्धार पर विस्मित हुआ: वे भयंकर पाशधारी कहाँ चले गए, और वे चार सुन्दर पुरुष कहाँ जिन्होंने उसे बचाया? निश्चय ही, उसने विचार किया, उसने पूर्व जन्मों में कोई असाधारण पुण्य अर्जित किया होगा, अन्यथा उसकी अपवित्र जिह्वा मृत्यु के ठीक क्षण में विष्णु का नाम कभी न उच्चार पाती (श्लोक 29-34)।



जीवन में लौटा और अपने अतीत की भयावहता से जागा अजामिल गहन पश्चात्ताप में बैठा है, मन के संयम तथा भगवद्भक्ति से स्वयं को शुद्ध करने का संकल्प लेता हुआ
(श्लोक 24-38)।

उस पश्चात्ताप से एक दृढ़ संकल्प उठा। अपने मन, इन्द्रियों तथा प्राण को वश में कर उसने प्रतिज्ञा की कि वह पुनः संसार के अन्धकार में नहीं डूबेगा। शरीर तथा उससे जुड़ी वस्तुओं के प्रति “मैं” और “मेरा” का भाव त्यागकर, समस्त प्राणियों के प्रति हितैषी और करुण, कामनाओं से रहित, वह अपने शुद्ध मन को भगवान् के नाम तथा महिमा के कीर्तन द्वारा परमेश्वर में लगाएगा (श्लोक 35-38)।

गंगाद्वार में तप और वैकुण्ठ में आरोहण

इन्द्रिय-सुखों से उसकी विरक्ति अब पूर्ण हो गई थी — भगवान् के सेवकों के क्षण भर के संग का फल — अजामिल ने अपनी प्रेयसी तथा सन्तानों के प्रति हर आसक्ति त्यागकर गंगाद्वार की ओर प्रस्थान किया, वह पावन स्थल जहाँ गंगा मैदानों में उतरती है, जो आज हरिद्वार के नाम से जाना जाता है (श्लोक 39)। वहाँ बसकर उसने योग-मार्ग अपनाया, इन्द्रियों को उनके विषयों से समेटा, और मन को परमात्मा में लगाया। गहन एकाग्रता से मन को शरीर से पृथक् कर उसने उसे समस्त चैतन्य के सार भगवान् में पूर्णतः समर्पित कर दिया (श्लोक 40-41)।



सब कुछ त्यागकर अजामिल गंगाद्वार (हरिद्वार) जाता है और गंगा-तट पर योग में लीन होकर अपने शुद्ध मन को परमेश्वर में स्थिर करता है (श्लोक 39-42)।

जब उसका मन भगवान् में अटल रूप से स्थिर हो गया, तब ब्राह्मण ने अपने सामने पुनः वही तेजस्वी पुरुष देखे जिन्हें उसने मृत्युशय्या पर देखा था। उन्हें पहचानकर उसने सिर झुकाया। तब गंगा-तट के उस पावन स्थल पर अपना पार्थिव शरीर त्यागकर उसने तत्काल भगवान् के पार्षदों के समान एक दिव्य रूप धारण किया, एक स्वर्ण-विमान पर आरुढ़ हुआ, और आकाश-मार्ग से वैकुण्ठ की ओर चढ़ गया, वह धाम जहाँ श्री की दिव्य स्वामी निवास करते हैं (श्लोक 42-44)।

श्रीशुकदेव का उपसंहार: तब क्या आश्चर्य?

श्रीशुकदेव ने राजा परीक्षित के लिए शिक्षा को स्पष्ट कर दिया। यह ब्राह्मण, जिसने हर पवित्र व्रत तोड़ा और नरक का पात्र बन गया था, केवल भगवान् के नाम के उच्चारण से क्षण भर में मुक्त हो गया (श्लोक 45)। मुक्ति चाहने वालों के लिए, उन्होंने कहा, पाप को उसकी जड़ से काटने में भगवान् विष्णु के नाम तथा महिमा के कीर्तन से अधिक प्रभावी कुछ नहीं; अन्य शुद्धिकरण-प्रक्रियाएँ मन को फिर भी दूषित छोड़ देती हैं, किन्तु नाम उसे पुनः पाप-मार्ग पर लौटने से रोकता है (श्लोक 46)। जो भी इस अत्यन्त गूढ़ और गुप्त आख्यान को श्रद्धा से सुनता है, अथवा भक्ति से दोहराता है, वह नरक नहीं जाता — यमराज के दूत उसकी ओर देखने का साहस भी नहीं करते — और वह चाहे जितना पापी रहा हो, आगे वैकुण्ठ में पूजित होता है (श्लोक 47-48)। और तब श्रीशुकदेव ने शिक्षा को एक ही दीप्तिमान् श्लोक से मुद्रित किया।

म्रियमाणो हरेर्नाम गृणन् पुत्रोपचारितम् ।

अजामिलोऽप्यगाद्धाम किमुत श्रद्धया गृणन् ॥ ४९ ॥

mriyamāṇo harer nāma gṛṇan putropacāritam ajāmilo 'py agād dhāma kim uta śraddhayā gṛṇan

अर्थ: मरते समय जिसने हरि का नाम पुकारा — और वह भी केवल अपने पुत्र के अर्थ में — वह अजामिल भी भगवान् का परम धाम प्राप्त कर गया। तब क्या आश्चर्य कि जो श्रद्धा से नाम का उच्चारण करता है वह भगवान् को प्राप्त करे? (स्कन्ध 6, अध्याय 2, श्लोक 49)

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवन्नाम हर पापी के लिए पूर्ण प्रायश्चित्त है। कोई पाप-श्रेणी वर्जित नहीं; विष्णु का नाम मन को भगवान् की ओर मोड़ देता है, और यही सच्ची शुद्धि है (श्लोक 9-10)।
2. नाम असावधानी से या भूलवश कहे जाने पर भी फल देता है। चाहे वह अनजाने में किसी और कारण से मुख से निकले, ठिठोली में हो, गीत की टेक में गुँथा हो, या ध्यान बँटे हुए बोला जाए, वह पाप को भस्म कर देता है — क्योंकि नाम स्वयं भगवान् से अभिन्न है (श्लोक 14)।
3. कर्मकाण्ड पाप मिटाता है; भक्ति उनके संस्कार भी मिटाती है। उपवास और दान प्रकट पापों को मिटाते हैं, किन्तु सूक्ष्म बीज भक्ति-सेवा से ही विलीन होते हैं; नाम अकेला ही मन को पुनः पाप करने से रोकता है (श्लोक 17, 46)।
4. कृपा सच्चे पश्चात्ताप और वैराग्य को जगाती है। अजामिल का उद्धार उसे निश्चिन्त नहीं बनाता; वह उसे अतीत के शोक तथा केवल भगवान् के लिए जीने के संकल्प से भर देता है (श्लोक 24-38)।
5. सच्ची भक्ति जीव को अन्त तक घर पहुँचा देती है। गंगाद्वार में अजामिल का तप और वैकुण्ठ में आरोहण दर्शाते हैं कि नाम केवल नरक से रक्षा नहीं, अपितु भगवान् के शाश्वत धाम का द्वार भी है (श्लोक 39-49)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय की सर्वाधिक उद्धृत पंक्ति उसकी अन्तिम है: यदि केवल अपने पुत्र को पुकारता अजामिल भी भगवान् के धाम पहुँच गया, “तब क्या आश्चर्य कि जो श्रद्धा से नाम कहे वह भगवान् को प्राप्त करे?” यह ध्यान देने योग्य है कि अध्याय इस शिक्षा को दुरुपयोग से कैसे बचाता है। अजामिल अपने पापों में नहीं छोड़ा जाता; जो शक्ति उसे बचाती है वही उसका हृदय पश्चात्ताप से खोल देती है और उसे शेष जीवन योग तथा स्मरण में बिताने हरिद्वार भेज देती है। भगवन्नाम ने उसके अतीत को क्षमा नहीं किया — उसने उसके भविष्य को रूपान्तरित कर दिया। यही सन्तुलन भागवत इतने सुन्दर ढंग से साधता है: नाम निःशुल्क, लगभग असंयत रूप से करुणामय है, हमारे सबसे अयोग्य क्षण में हममें से बुरे-से-बुरे तक पहुँचता है; और ठीक इसीलिए कि वह इतना करुणामय है, वह बचाए हुए जीव में यह लालसा जगाता है कि वह अन्ततः उस कृपा के योग्य बने जो उसे पहले ही मिल चुकी है। हमसे नाम को पुकारने से पहले उसे अर्जित करने को नहीं कहा जाता। हमसे केवल यह कहा जाता है कि उसकी करुणा का स्वाद पा लेने के बाद, उसे पुकारते रहें — अब प्रेम से।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, भगवान् के नाम का स्मरण सौदेबाज़ी के बजाय कृतज्ञता के स्वर में करें। शान्त बैठिए, और कीर्तन से पहले, अपने जीवन के उस एक क्षण को स्मरण कीजिए जब आप ऐसे बचाए या रक्षित हुए जिसके आप पात्र न थे। फिर उस कृतज्ञता को धारण किए, धीरे और ध्यानपूर्वक कहिए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” नाम को, जैसा अजामिल के लिए उसके उद्धार के बाद था, कोई जादुई सूत्र नहीं, अपितु एक बदले हुए जीवन का आरम्भ बनने दीजिए — हृदय का प्रतिदिन का एक छोटा-सा उस ओर मुड़ना जो पहले ही आपकी ओर मुड़ चुका है।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का द्वितीय अध्याय अजामिल की मृत्युशय्या पर आरम्भ हुई कथा को पूर्ण करता है और उसके माध्यम से भागवत के केन्द्रीय आश्वासनों में से एक देता है: भगवान् का नाम परम शोधक है, समस्त कर्मकाण्ड से अधिक सामर्थ्यवान्, समस्त योग्यता से अधिक करुणामय। विष्णुदूत अपना पक्ष कर्म के विधान को नकारकर नहीं, अपितु कर्म से भी महान् किसी वस्तु को प्रकट कर जीतते हैं — भगवान् की अपनी उत्कण्ठा कि जो भी उनके नाम में उनकी ओर तनिक भी मुड़े, उसे वे अपना बना लें। अजामिल, मुक्त होकर, इस उपहार को नहीं गँवाता; वह पश्चात्ताप करता है, त्याग करता है, और भक्ति से स्वर्ण-रथ में वैकुण्ठ चढ़ जाता है। और श्रीशुकदेव राजा परीक्षित को — तथा हमें — नाम के कोमल तर्क के साथ छोड़ देते हैं: यदि उसने उस मनुष्य को बचाया जिसने उसे संयोगवश पुकारा, तो कल्पना कीजिए वह उसके लिए क्या करेगा जो उसे प्रेम से पुकारता है। यही हमारा शान्त विश्वास बने जैसे-जैसे स्कन्ध आगे बढ़ता है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, द्वितीय अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद अथवा टीका की प्रतिलिपि नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-6-adhyay-2-vishnudooton-dwara-ajamil-ka-uddhar-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट